आपबीती

अब मैं कोई अनजान नहीं हूं

अमाई टोरिरो (बीच में)

"मेरा नाम अमाई टोरिरो है। यह मेरी ज़िंदगी की कहानी है जिसमें मेरे स्वास्थ्य कार्यकर्ता बनने के बाद काफी बदलाव आया। सन् 1995 में मेरा पति मुझे व सात बच्चों को छोड़कर चला गया। छः साल तक वह एक दूसरी औरत के साथ रहता रहा। फिर वापस लौटकर हमारे पास आ गया। दो वर्षों के भीतर मेरा पति गुज़र गया। मैं अपना घर-बार संभालती रही।

शुरू-शुरू में मुझे काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं थे। फिर मैं सामुदायिक स्वास्थ्य क्लब के साथ जुड़ गई जो ज़िम्बाबवे की 'अहेड' संस्था का हिस्सा था। हम अपने क्लब को 'रूजेको' कहते थे जिसका अर्थ है रोशनी। छः माह तक मैंने स्वास्थ्य सत्रों में हिस्सा लिया जहां मुझे कुछ ऐसी नई बातें सीखने को मिलीं जिनसे मेरी व बच्चों की ज़िंदगी बेहतर बनी। यहां मुझे स्वच्छता व परिवार की देखभाल में साफ़-सफ़ाई का महत्व समझाया गया। कुछ आम बीमारियों जैसे दस्त, मलेरिया, चर्मरोग, पेट में कीड़े व यौन संक्रमण से बचने के तरीके भी सिखाये गये। छः महीनों में मैं एक कुशल स्वास्थ्य कार्यकर्ता बन गई। मेरे पास प्रशिक्षण प्रमाण पत्र भी मौजूद था।

अपनी मीटिंगों में हमने रोज़मर्रा के जीवन को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक बातों पर चर्चाएं कीं और गृहकार्य के ज़रिए इस ज्ञान को जीवन में उतारा। सबसे पहले बच्चों के साथ मिलकर हमने अपने घर के आंगन में एक कूड़ा डालने का गड्डा खोदा। अब हम सारा कचरा इस गड्डे में डालते थे। रसोई के लिए हमने मिट्टी के बर्तन और उन्हें धोकर सुखाने के लिए शैल्फ व रैक बनाए। पीने के पानी को ढककर रखा तथा उसे निकालने के लिए लुटिया का उपयोग शुरू किया। घर के बाहर हमने एक कुआं तथा गड्डानुमा पाखाना भी बनाया। अब मेरे बच्चों की सेहत काफी बेहतर है और वे कम बीमार पड़ते हैं।

क्लब के हर सदस्य को आर्थिक बेहतरी के लिए काम सिखाया जाता है। मैंने भी तेल निकालना, मच्छरदानी सीना और कागज़ बनाना सीखा। मेरे दो बच्चों ने भी कागज़ बनाना सीखकर नौकरी शुरू कर दी। क्लब के कुछ सदस्य मधुमक्खी पालन से भी जुड़े थे। मैंने घर के पास काफी पेड़-पौधे लगाए तथा सब्ज़ियां उगाईं। इन सभी घरेलू उद्योगों से पैसे जमा करके मैंने चार कमरों का मकान बनाया जिसमें इंट की दीवारें और टीन की छत है। ड्रिप सिंचाई के माध्यम से मैंने अपने घर में विभिन्न प्रकार के हर्ब, जड़ी-बूटियां व सब्ज़ियां उगाई हैं। शहद, सब्ज़ी व हर्ब बेचकर मैं अच्छा-खासा पैसा जमा कर लेती हूं।

एक औरत होने के नाते मेरे लिए घर व बच्चों की देखभाल बहुत महत्वपूर्ण है। अब मैं अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हूं और साथ ही उन्हें अपना जीवन बेहतर बनाने के लिए प्रेरित भी करती हूं। आज हम सब खुश, आज़ाद और गर्व से जीते हैं। ज्ञान व कौशल के ज़रिए मैं सशक्त महसूस करती हूं।

हमारा स्वास्थ्य क्लब गांव के अन्य महिलाओं व परिवारों की भी मदद करता है। हम एड्स ग्रस्त लोगों को छोटे-छोटे संक्रमणों से बचाए रखने में भी मदद करते हैं। उनकी देखभाल करने वालों को हम प्रशिक्षण देते हैं। जब गांव में कोई मर जाता है तो हम उस परिवार को अपने जीवने की बागडोर संभालने में मदद करते हैं। अनाथ बच्चों, बुजुर्गो व विधवा औरतों को भी हम कपड़ों व भोजन देकर मदद करते हैं।

हम स्वास्थ्य कार्यकर्ता हर हफ्ते मिलकर खेलते-कूदते हैं और दुख-सुख बांटते हैं। हमारे इलाके में अब बीस स्वास्थ्य क्लब हैं और हरेक में 100 सदस्य हैं। मकोनी ज़िले में कुल 200 क्लब हैं और लगभग बीस हज़ार लोग इसके सदस्य हैं। इन क्लबों में मुझ जैसी कई औरतें है जिनके साफ़-सुथरे घर और सशक्त-स्वास्थ्य बच्चे हैं। इस पृथ्वी पर मैं अपने योगदान से खुश हूं हालांकि मैं जानती हूं कि मुझे एड्स है और मेरी मौत कभी भी हो सकती है।"

सन् 2010 में अमाई टोरिरो की मृत्यु हो गई। अमाई ने अपने काम व ऊर्जा के ज़रिए अपने समुदाय के सामने सशक्तता और वचनबद्धता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। हांलाकि वह अकाल मृत्यु का शिकार हुई फिर भी उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होकर परिवार व बच्चों का पालन-पोषण किया। मकोनी ज़िले के लोग अमाई को स्नेह के साथ याद करते हैं। जैसा कि अमाई ने एक बार हमें कहा था, 'अब मैं कोई अनजान नहीं हूं।' हम अमाई की यह कहानी उन्हीं के शब्दों में आपके साथ बांट रहे है जिससे अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिल सके।